

DR. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G-T)

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

NATURE OF EMOTIONS

संवेगों का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। मनुष्य के बहुत-से कार्यों के अभिप्रेरक संवेग है। जान हथेली पर रखकर युद्धस्थल में लड़ने, वीरता और शौर्य के कार्य करने में मनुष्य की बुद्धि अथवा विचारों से नहीं बल्कि संवेगों से ही अभिप्रेरणा मिलती है। संवेग के बिना जीवन नीरस होता है। व्यक्ति को परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया करने की अभिप्रेरणा भी संवेग द्वारा प्राप्त होती है। यह सभी के अनुभव की बात है कि संवेगात्मक अवस्था में शक्ति संचालन बढ़ जाता है। क्रोध या उत्साह

आने पर मनुष्य ऐसे साहसिक कार्य कर बैठता है जो जिनको वह सधारन दशा में ज सामान्य मानसिक दशा में कभी नहीं कर सकता । प्रेम की संवेगात्मक अवस्था में व्यक्ति प्रेमपात्र के लिए इतने महान त्यागकर गुजरता है जिनको वह सधारन दशा में कभी नहीं कर सकता । वात्सल्य का संवेग मां-बाप से बालकों के लिए बड़े से बड़े त्याग करा लेता है ।

संवेगावस्था में कुछ व्यक्ति थोड़े समय के लिए अपने बुद्धि पर से नियंत्रण खो देते हैं । नियंत्रण खो देने के कारण व्यक्ति कुछ उचित काम करता है तो कुछ अनुचित काम करता है । क्रोध आने पर व्यक्ति अनुचित काम कर बैठता है । संवेगावस्था अत्यधिक प्रबल होने पर व्यक्ति की दशा पागल जैसी हो जाती है । उस समय उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं होता । वह बुरा काम भी उसी इतरह कर सकता है जिस तरह अच्छा काम कर सकता है । इस प्रकार मानव जहाँ कुछ संवेगों से उंचाईयों तक

पहुँचता है, वहीं कुछ अन्य संवेगों के कारण वह पशु
केस्तर पर पहुंच जाता है ।